नाम - डा. प्रदीप कुमार राय
विषय - राजनीतिशास्त्र
वर्ग - बी.ए (प्रतिष्ठा) पार्ट - 2, सत्र - 2019-20
पेपर - 04, 17 (3)
उपनाम
नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग
शीतलाब महिला कॉलेज, सासाराम
दिनांक - 13.5.20

टॉपिक - भारतीय विदेशनीति के मूल तत्व या सिद्धांत अथवा विशेषतायें

— स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व अंतरिम सरकार (1946) के समय ही भारतीय विदेशनीति की रूपरेखा खींचनी शुरू हो गई थी जिसमें यह स्पष्ट किया गया था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय विदेशनीति स्वतंत्र, गुटरहित, उपनिवेशवाद एवं प्रजातीय विभेद का विरोधी तथा विश्व शांति का समर्थक रहेगी। यदि भारतीय विदेशनीति का विश्लेषण करें तो निम्न विशेषतायें प्रकट होती है —

(The Policy of Non-Alignment)

1) गुटनिरपेक्षता की नीति — विश्व राजनीति में भारतीय दृष्टिकोण गुटनिरपेक्षता अभिप्रेरित रही है। स्वाधीनता के समय विश्व में शीतयुद्ध का दौर प्रारंभ हो चुका था दुनिया दो गुटों में बंटी थी ऐसी स्थिति में अपने तत्कालिन विषम आर्थिक, तकनीकी, सामरिक आदि हित को देखते हुये यह आवश्यक था कि भारत गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुसरण करे ताकि वह दोनों गुटों से अपने विकास, आर्थिक हित, तकनीक, सहायता आदि की दृष्टि से

सहयोग प्राप्त कर सके। भारत की गुटनिरपेक्षता एक विधेयात्मक, सक्रिय और रचनात्मक नीति है। यह सकारात्मक है तथा अनीति एवं अन्याय के विरुद्ध है। जैसा कि अमरीकी सीनेट में बोलते हुये पं. नेहरू ने कहा था कि 'यदि स्वतंत्रता का हनन होगा, न्याय की हत्या होगी अथवा कहीं आक्रमण होगा तो वहां हम न तो आज तटस्थ रह सकते हैं और न भविष्य में तटस्थ रहेंगे।' अप्पा दोराई ने भी इसे स्वतंत्रता एवं शांति के उद्देश्यों को प्राप्त करने वाला, शांति, स्वतंत्रता एवं मैत्री के प्रति प्रयत्नशील तथा अर्द्धविकसित राष्ट्रों का आर्थिक विकास करना है।

भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता की नीति के 1947 से लेकर अबतक की स्थिति से यह स्पष्ट है कि यह एक गतिशील विदेश नीति के रूप में सिद्ध हुई है। समय-समय पर कतिपय प्रसंगों में कभी यह पश्चिमी गुट, कभी अमरीकी खेमे तो कभी सोवियत संघ के प्रति अधिक निकट या झुकाव वाली रही है किंतु इसके बावजूद यह अपने मूल स्वरूप से विलग नहीं हुई है। भारत-पाक युद्ध, चीन कुछ आक्रमण, अफगान संकट, गोआ प्रकरण, आतंकवाद, आदि विभिन्न अवसरों पर भारत ने विवेकपूर्ण तरीके से इस नीति को सार्थक एवं समसामयिक बनाये रखने का सार्थक प्रयास किया है। जैसा कि डा. वी.पी. दत्त ने कहा है कि,'

'गुटनिरपेक्षता का सिद्धांत विदेशनीति का दिशा-सूचक रहा है, क्योंकि इससे राष्ट्रीय हितों का संवर्धन हुआ है।'

(2.) शांति की विदेशनीति (Policy of Peace)-

भारत की विदेशनीति सदैव शांति समर्थक रही है। स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद अपनी विभिन्न हितों को लेकर, अंतर्राष्ट्रीय विवादों के निपटारे के क्रम में शांतिपूर्ण साधनों, वार्ताओं, मध्यस्थता, पंचनिर्णय सभी भारतीय विदेशनीति के अविभाज्य अंग रहे हैं। 1960 के सिंधुजल संधि, 1965 के भारत-पाक युद्ध में त्रिपक्षीय ट्रिब्यूनल स्थापना की स्वीकृति, 1966 के ताशकंद समझौते का पालन, 1972 में शिमला समझौते का पालन, पाक युद्धबंदियों को लौटाना, 1977 का फरक्का समझौता, 1987 का राजीव-जयवर्द्धने समझौता, निरस्त्रीकरण पर जोर, 1968 की परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर न करना, 1974 का अणु शक्ति का शांतिपूर्ण कार्यों के लिये प्रयोग, आतंकवाद के 1993 व्यापक गठजोड़ पर बल, कोरोना काल में विश्व को दवा सहायता आदि अनेकानेक उदाहरण भारत के विश्व शांति के प्रति उनके प्रतिबद्ध कदमों के परिचायक हैं।

(3.) मैत्री और सह-अस्तित्व की नीति (Policy of Friendship And Peaceful Co-existence)-

भारत द्वारा अपनी वैदेशिक नीति में मैत्री एवं सह-अस्तित्व पर बल दिया गया है ताकि परस्पर विरोधी विचारधाराओं में

सह-अस्तित्व की भावना पैदा हो। भारत-नेपाल संधि, भारत-इराक मैत्री संधि, भारत-जापान शांति संधि, भारत-मिस्र शांति संधि, भारत-सोवियत मैत्री संधि, भारत-बांग्लादेश मैत्री संधि, विभिन्न संघीय एवं वैश्विक संगठनों में भागीदारी जैसे आसियान, ब्रिक्स, जी-20, में भी इन भावनाओं का भी ख्याल रखकर सम्मिलित होने का प्रयास किया गया है।

(स.) विरोधी गुटों के बीच सेतुबन्ध बनाने की नीति (Policy to Act as A Mediator Between Power Blocks) — भारत अपनी विदेशनीति द्वारा परस्पर विरोधी गुटों के मध्य सेतुबंध का कार्य करता रहा है जो उसकी गुटनिरपेक्षता की नीति, अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर विश्व शांति एवं सुरक्षा एवं विकास हित का प्रयास इन सबसे प्रेरित है। कोरिया, हिंदचीन, कांगो आदि समस्याओं के समाधान में गुटों को समीप लाने का प्रयास होते आया है।...(शेष)